01

सेतुबन्ध गाथा

14. सत्तच्छआणं गन्धो लग्गइ हिअए खलइ कलम्बामोओ।
कलहंसाण कलरओ ठाइ ण संठाइ परिणअ सिहिविरुअ ॥

अर्थ - अब सप्तच्छद छितौना का गन्ध मनोहारी लगता है, कदम्ब का गन्ध स्खलित हो रहा है अच्छा नहीं लगता है कलहंसों का कलरव कर्णप्रिय लग रहा है लेकिन असामयिक विरस होने के कारण मोरों की ध्वनि अच्छी नहीं लग रही है।

15. पीणपओहरलग्गं दिसाणं पवसन्तजलअसमअविइण्णं।
सोहग्गपढमइण्हं पम्माअइ सरसणहवअं इन्दधणुं ॥

अर्थ - प्रवास के समय वर्षाकाल रूपी नायक के द्वारा प्रदत्त दिशा - नायिकाओं के उन्नत - पयोधरों में लगे हुए सौभाग्य के प्रथम चिन्ह स्वरूप इन्द्रधनुष रूप सरस नखक्षत मलीन हो गया है।

16. पज्जत्तसलिलधोए दूरालोक्कन्तणिम्मले गअणअले।
अच्चासण्णं विअ विमुक्क परभाअयाअइ ससिबिम्बं ॥

अर्थ - पर्याप्त वर्षा जल से प्रक्षालित दूर से ही दृश्यमान निर्मल गगन - तल में मेघादि से विमुक्त होने के कारण प्रकट - चन्द्रबिम्ब अत्यन्त निकट स्थित जैसा दिखाई पड़ रहा है।

17. चिरआलापडिणिअं दिसासु घोलन्तकुमु-
अरअबेल्लविईं ।
भमइ अलद्धासाअं कमलाअरदंसणुस्सुअं हंसउलं

अर्थ = बहुत समय के बाद लौटा हुआ मन्द पवन से प्रेरित
चूककर, काटते हुए कुमुदरज पुष्प पराग से विलिप्त
ओत-प्रोत या अस्त व्यस्त अतृप्तस्वाद से युक्त
असंतुष्ट हंस-समुह स्वाद प्राप्त के लिए कमल
सरोवर दर्शन के लिए उत्सुक होकर दिशाओं
में घूम रहा है।

18. चन्दाअवधवलाओ फुरन्तदिअसरअणान्तरिअसोहाओ ।
सोम्मे सरअस्स उरे मुत्तावलिविब्भमं वहन्ति णिसाओ ।।

अर्थ = चन्द्रप्रकाश से धवलित (शुभ्र) एवं दीप्यमान
दिवस रत्न से परिव्याप्त शोभावती रात्रियां स्वच्छ
शरद के वक्षस्थल पर मुक्तावली की सुन्दरता को
धारण कर रही है।

19. भमररुअदिण्णसण्णं घणरोहविमुक्कदिणअरअराबिद्धं ।
फंसिसुहाअन्तं विअ पडिबुज्झइ जलणिहित्तणालं ।।

अर्थ = भ्रमरों के गुंजार से जागृत मेघ के अवरोध से
विमुक्त, सूर्य के किरणों से आलिङ्गित, स्पष्ट जल में
निहित नाल वाला कमल मानों स्पर्श सुख
का अनुभव करता हुआ विकसित हो
रहा है।